पाठ - 1 'पद' (सूरदास)

पाठ का सार

सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' से ये पद लिए गए हैं। श्रीकृष्ण के ब्रज से मथुरा चले जाने के पश्चात वे वहाँ नहीं लौटे थे परंतु उन्हें गोपियों की दशा का अनुमान था। उन्होंने काफी समय से कोई संदेश गोपियों को नहीं भेजा था। अतः उन्होंने अपने मित्र उद्धव को गोपियों की दशा देखने तथा उन्हें समझाने के लिए भेजा। उद्धव सगुण भक्ति के स्थान पर निर्गुण भक्ति करते थे। जब उन्होंने वह ज्ञान, गोपियों को दिया तो उन्हें उद्धव पर गुस्सा भी आया और दुख भी हुआ। गोपियों की पीड़ा और अधिक बढ़ गई।

गोपियाँ मानती हैं कि उद्धव बहुत भाग्यशाली हैं जो वे कृष्ण के प्रेम में नहीं पड़े, वे कमल के पत्ते और तेल की गागर के समान श्री कृष्ण के साथ रहते हुए भी प्रेम बंधन से मुक्त हैं। श्री कृष्ण से मिलने की गोपियों की अभिलाषा उनके मन में ही रह गई है। श्री कृष्ण तो उनके लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान है, जो मृत्यु के पश्चात ही उसके पंजों से छूटती है। वे उद्धव को कहती हैं कि कृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है पर वे ये भूल गए हैं कि राजधर्म प्रजा की चिंता करना है, उसे सताना नहीं।

पद

1. ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी। - - - - - - - - - - - - -
- - - - - - - - - - - - - - - - - गुर चाँटी ज्यौं पागी ॥

अर्थ → श्री कृष्ण ने मथुरा से उद्धव को ब्रज में गोपियों को समझाने के लिए भेजा था। उद्धव निर्गुण भक्ति के उपासक थे अतः उनके उपदेश सुनकर गोपियों ने व्यंग्य करते हुए उन्हें बहुत भाग्यवान माना कि उद्धव कृष्ण के प्रेम के धागे से नहीं बँधे हैं, वे कमल के पत्ते के समान हैं, और ऐसे चिकने घड़े के समान हैं जिन पर पानी नहीं ठहरता। सूरदास

Scanned with CamScanner

जो कहते हैं कि गोपियाँ स्वयं को भोली कहती हैं और कहती हैं कि अच्छा है उद्धव ने प्रेम की नदी में अपना पैर नहीं डुबोया है, हम तो इस तरह कृष्ण के प्रेम में पड़ी हैं जैसे गुड़ में चींटी।

भाव सौंदर्य – इस पद में गोपियों ने उद्धव को संवेदनहीन सिद्ध करने के लिए अनेक उदाहरण दिए हैं। गोपियाँ किसी भी स्थिति में कृष्ण को भुलाना नहीं चाहती और न ही कोई और तरीका अपनाकर स्वयं को कृष्ण से दूर करना चाहती हैं।

काव्य सौंदर्य – ब्रजभाषा का प्रयोग है। 'पुरइनि पात' में अनुप्रास अलंकार है। 'प्रीति नदी' में रूपक अलंकार है। गोपियों की तुलना चींटी से करने में उपमा अलंकार है।

2. मन की मन ही माँझ रही। - - - - - - - -
- - - - - - - - - मरजादा न लही ॥

अर्थ – इस पद में गोपियों की व्यथा का वर्णन है। गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि उनकी अभिलाषाएँ मन में ही रह गई हैं। वे अपनी व्यथा किसी से कह नहीं सकतीं। उनके मन में श्रीकृष्ण के लौट आने की आशा थी जो कि अब समाप्त हो गई है। उद्धव के योग संदेश को सुनकर गोपियों की व्यथा और बढ़ गई है। अब हमने भी अपनी मर्यादा छोड़ दी है। जब कृष्ण ने ही अपनी मर्यादा का पालन नहीं किया तो हम ही क्यों करें?

भाव सौंदर्य – इस पद में गोपियों की प्रतिक्रिया उद्धव की आशा के विपरीत प्रकट हुई है। वे कृष्ण के इंतजार में समय बिताना चाहती हैं, परंतु ऐसा हो नहीं रहा। उद्धव के योग संदेश ने उनकी व्यथा (कष्ट) को बढ़ा दिया है।

काव्य सौंदर्य – ब्रजभाषा का प्रयोग है। वियोग शृंगार की चरम अवस्था का वर्णन है।
बिरहिनि बियोग, अवधि - अधार, आस - आवन, में अनुप्रास अलंकार है।

Scanned with CamScanner

पाठ-1 'पद' (सूरदास)

3. हमारैं हरि हारिल की लकरी। - - - - - - - - - -
- - - - - - - - - - - जिनके मन चकरी।

अर्थ गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि कृष्ण को हमने उसी प्रकार पकड़ रखा है जैसे हारिल पक्षी लकड़ी पकड़े रहता है। मन, क्रम, वचन से हमने कृष्ण को पकड़ लिया है। हम हर समय उनके ध्यान में ही रहती हैं। योग की बातें हमारे लिए कड़वी ककड़ी के समान हैं। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि योग की शिक्षा उन लोगों को दो जिनका मन अस्थिर है। हम तो कृष्ण के प्रति निष्ठावान हैं।

भाव सौंदर्य – इस पद में गोपियों के कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। उनके लिए कृष्ण ही एकमात्र आश्रय हैं। योग तो उनके लिए कड़वी ककड़ी के समान है। वे किसी भी हालत में योग को स्वीकार नहीं करना चाहतीं।

काव्य सौंदर्य – ब्रज भाषा का प्रयोग है। 'हमारैं हरि हारिल' तथा नंद-नंदन में अनुप्रास अलंकार है।
'कान्ह-कान्ह' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। योग की उपमा कड़वी ककड़ी से की गई है।

4. हरि हैं राजनीति पढ़ि आए। - - - - - - - - - -
- - - - - - - - - - पर हित डोलत धाए।

अर्थ – इस पद में उद्धव को भ्रमर बताते हुए गोपियाँ कहती हैं कि अब श्रीकृष्ण ने राजनीति सीख ली है। अब उद्धव से बात कर उन्हें कृष्ण के सारे समाचार मिल गए हैं। एक तो वे पहले ही चतुर थे अब तो अपने गुरु से शिक्षा भी मिल गई है। उनकी बुद्धि अधिक हो गई है, तब ही तो योग का संदेश भिजवाया है। हे उद्धव! पहले के लोग भले थे जो दूसरों की भलाई के लिए दौड़ कर आते थे। चलते समय श्रीकृष्ण जो हमारा हृदय चुरा कर ले गए थे, अब उनके मन में बदलाव आ गया है। वे स्वयं अन्याय

Scanned with CamScanner

कर रहे हैं जो दूसरों के अन्याय से लोगों को छुड़ाते थे। सूरदास जी कहते हैं कि राजधर्म यह कहता है कि प्रजा को सताया न जाए, उनकी रक्षा की जाए।

भाव सौंदर्य - इस पद में गोपियाँ उलाहना देती हैं कि श्रीकृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है, वे प्रेम की नहीं, राजनीति की भाषा बोलने लगे हैं। प्रेम के साथ ही वे राजधर्म भी भूल गए हैं, जो गोपियों की रक्षा करने के स्थान पर उनके साथ अन्याय कर रहे हैं।

काव्य सौंदर्य - ब्रजभाषा का प्रयोग है। 'गुरु - ग्रंथ', बढ़ी-बुद्धि में अनुप्रास अलंकार है।

*

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न - 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर → गोपियाँ उद्धव को 'अति बड़भागी' अर्थात् भाग्यवान कहती हैं। यह बात वे सामान्य ढंग से न कहकर व्यंग्य में कहती हैं। इस कथन में यह व्यंग्य निहित है कि उद्धव श्री कृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रेम से अलिप्त हैं। वे कृष्ण-प्रेम के बंधन में नहीं पड़े। यदि वे इसमें पड़े होते तो उनकी दशा भी गोपियों के समान हो जाती। वे कृष्ण-प्रेम के प्रति निर्लिप्त बने रहने में सफल रहे हैं अतः भाग्यशाली हैं। वे उद्धव की स्तुति के बहाने निंदा कर रही हैं।

प्रश्न - 2 उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किससे की गई है?

उत्तर → उद्धव के व्यवहार की तुलना दो चीजों से की गई है -

(i) वे कमल के पत्ते के समान अलिप्त हैं। जिस प्रकार कमल जल में रहता है पर उसके पत्ते जल से ऊपर रहते हैं। उनपर जल का प्रभाव नहीं पड़ता। इसी प्रकार उद्धव पर भी कृष्ण-प्रेम का प्रभाव नहीं पड़ सका है।

Scanned with CamScanner

पाठ - 1 'पद' (सूरदास)

(ii) उद्धव की दशा उस तेल की गागर के समान है जो जल में रहती है, पर उस पर पानी की एक बूँद भी नहीं टिक पाती। इसी प्रकार उद्धव कृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रेम से अछूते हैं।

प्रश्न-3 गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर→ गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं—

(i) कमल के पत्ते के माध्यम से।
(ii) तेल की मटकी के माध्यम से।
(iii) प्रेम-नदी के माध्यम से।

प्रश्न-4. उद्धव के दिए गए योग संदेश ने गोपियों की विरह-अग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर→ गोपियाँ तो पहले से विरह की अग्नि में जल रही थीं। वे कृष्ण-वियोग की पीड़ा झेल रही थीं। उन्हें आशा थी कि कृष्ण शीघ्र ही लौट आएँगे, पर जब उनके स्थान पर उद्धव आए और उन्होंने योग का संदेश सुनाया तब गोपियों पर इसकी विपरीत प्रतिक्रिया हुई। इस योग-संदेश ने उनकी विरहाग्नि में घी का काम किया। इसे सुनते ही उनकी विरह की अग्नि और भी भड़क उठी। उनके सब्र का बाँध टूट गया।

प्रश्न-5 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर→ अभी तक गोपियाँ मर्यादा का पालन करते हुए चुपचाप कृष्ण-वियोग की पीड़ा को झेल रही थीं। अब जबकि कृष्ण ने उद्धव के माध्यम से योग का संदेश भिजवा दिया है तब सारी मर्यादा समाप्त हो गई। अब वे भला किस मर्यादा का पालन करें? अब तो उनकी मान-मर्यादा जाती रही।

Scanned with CamScanner

पाठ - 1 'पद' (सूरदास)

प्रश्न - 6. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर → गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा उन लोगों को देने की बात कही है जिनके मन चकरी के समान घूमते रहते हैं। उनके मन अस्थिर हैं। योग मन को स्थिर करता है। गोपियों के मन तो पहले से ही श्रीकृष्ण के प्रति एकनिष्ठ हैं; अतः उन्हें योग की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

प्रश्न - 7. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर → गोपियों के अनुसार राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह प्रजा को कभी सताए नहीं और उसकी भलाई में निरंतर लगा रहे। इसके साथ ही वह अपनी प्रजा को अन्याय से छुटकारा दिलाए।

प्रश्न - 8. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर → गोपियों ने कृष्ण के स्वभाव में कई परिवर्तन देखे—
(i) अब कृष्ण भोले-सरल न रहकर राजनीतिज्ञ बन गए हैं।
(ii) उन्होंने बहुत सारे ग्रंथ पढ़ लिए हैं और अधिक बुद्धिमान प्रतीत होने लगे हैं।
(iii) अब वे प्रेम के स्थान पर योग की बातें करने लगे हैं।
(iv) अब वे अनीति करने लगे हैं।
(v) अब वे राजधर्म की उपेक्षा करने लगे हैं।

——*——

Scanned with CamScanner

कक्षा - दसवीं हिंदी 'अ' क्षितिज भाग - 2 (काव्य खंड)

Date
Page 7

पाठ - 1 'पद' (सूरदास)

गृह-कार्य

1) कवि सूरदास द्वारा रचित 'पद' के सभी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी की कॉपी में सुन्दर अक्षरों में लिखें तथा याद करें।

2) कवि सूरदास के चारों पदों के अर्थ अपनी हिन्दी कॉपी में सुन्दर अक्षरों में लिखकर याद करें।

Scanned with CamScanner

वाक्य-भेद (रचना के अनुसार)

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—
1) सरल वाक्य 2) संयुक्त वाक्य 3) मिश्र वाक्य

1) **सरल वाक्य** → जिन वाक्यों में एक ही क्रिया होती है, उन्हें सरल वाक्य कहते हैं। सरल वाक्यों में कर्ता एक से अधिक हो सकते हैं परंतु विधेय और क्रिया एक ही होते हैं। जैसे—
(क) सोहन ने मकान बनवाया।
(ख) श्याम को पुस्तकें दो।
इन वाक्यों में एक-एक क्रिया - बनवाया, दो है, इसलिए ये सरल वाक्य हैं।

2) **संयुक्त वाक्य** → जिन वाक्यों में आए सभी उपवाक्य समान स्तर के होते हैं, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं। ये उपवाक्य समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़े होते हैं। जैसे—
(क) यात्री बैठ गए और बस चल पड़ी।
(ख) बिजली नहीं है इसलिए अंधेरा है।
(ग) कार से चलेंगे ताकि समय पर पहुँच जाएँ।
इन वाक्यों में समान स्तर के उपवाक्य हैं। ये समुच्चय-बोधक शब्दों - और, इसलिए, ताकि से जुड़े हुए हैं। इसलिए ये संयुक्त वाक्य हैं।

3) **मिश्र वाक्य** →
जिन वाक्यों में आए उपवाक्यों में एक उपवाक्य मुख्य हो और शेष उपवाक्य, मुख्य उपवाक्य पर आश्रित हों, उन्हें मिश्र वाक्य कहते हैं। ये उपवाक्य समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़े होते हैं। जैसे—
(क) सिपाही ने उस युवक को पीटा जिसने जेब काटी थी।
(ख) अशोक मेहता मुख्य-अतिथि थे जो प्रसिद्ध साहित्यकार हैं।

Scanned with CamScanner

वाक्य-भेद (रचना के अनुसार)

इन वाक्यों में जिसने जेब काटी थी, जो प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। आश्रित उपवाक्य हैं।

आश्रित उपवाक्य के भेद

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—
1.) संज्ञा उपवाक्य 2) विशेषण उपवाक्य 3) क्रिया विशेषण उपवाक्य।

1) **संज्ञा उपवाक्य** → किसी वाक्य में जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की संज्ञा के स्थान पर आते हैं, उन्हें संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। ये उपवाक्य समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़े होते हैं। जैसे—
(क) रानी नहीं आएगी, सुमिता जानती थी।
संज्ञा उपवाक्यों के आरंभ में प्रायः 'कि' शब्द आता है। ये मुख्य उपवाक्य से 'कि' द्वारा जुड़े होते हैं। यदि संज्ञा उपवाक्य वाक्य के आरंभ में आ जाते हैं तो इनके साथ 'कि' का प्रयोग नहीं होता।

2) **विशेषण उपवाक्य** → किसी वाक्य में आनेवाले आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे—
(क) जो पैसे मुझे मिले थे, वे खर्च हो गए।
(ख) यह वही आदमी है, जिसने कल चोरी की थी।
इन वाक्यों में 'जो पैसे मुझे मिले थे' और 'जिसने कल चोरी की थी' विशेषण उपवाक्य हैं। विशेषण उपवाक्यों का आरंभ प्रायः जो, जिससे, जिसे, जिसमें, जिसने आदि से होता है।

3) **क्रिया-विशेषण उपवाक्य** → किसी वाक्य में आनेवाले जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं। जैसे—

Scanned with CamScanner

वाक्य-भेद (रचना के अनुसार)

(क) ज्योंहि पढ़ने बैठा बिजली चली गई।
(ख) जब घंटी बजी फोन उठा लिया।
इन उपवाक्यों में 'ज्योंही पढ़ने बैठा' और 'जब घंटी बजी' क्रिया विशेषण उपवाक्य हैं।

संरचना की दृष्टि से वाक्य-रचनांतरण

संरचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं—
1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य
इन वाक्यों का एक-दूसरे में परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन निम्न रूपों में होता है—
1) सरल वाक्य का संयुक्त वाक्य में रचनांतरण।
2) सरल वाक्य का मिश्र वाक्य में रचनांतरण।
3) संयुक्त वाक्य का सरल वाक्य में रचनांतरण।
4) संयुक्त वाक्य का मिश्र वाक्य में रचनांतरण।
5) मिश्र वाक्य का सरल वाक्य में रचनांतरण।
6) मिश्र वाक्य का संयुक्त वाक्य में रचनांतरण।

1.) सरल वाक्यों का संयुक्त वाक्यों में रचनांतरण

(क) सरल वाक्य :- बच्चे नाश्ता करके विद्यालय गए।
संयुक्त वाक्य : बच्चों ने नाश्ता किया और विद्यालय गए।
(ख) सरल वाक्य : नेता भाषण देकर चला गया।
संयुक्त वाक्य : नेता ने भाषण दिया और चला गया।

2.) सरल वाक्यों का मिश्र वाक्यों में रचनातंरण

(क) सरल वाक्य : प्रथम आनेवाला पुरस्कार पाएगा।
मिश्र वाक्य : जो प्रथम आएगा वह पुरस्कार पाएगा।
(ख) सरल वाक्य : रूपा नौकरी करना चाहती है।
मिश्र वाक्य : रूपा चाहती है कि वह नौकरी करे।

3) संयुक्त वाक्यों का सरल वाक्यों में रचनातंरण

(क) संयुक्त वाक्य : बिजली नहीं थी इसलिए अंधेरा था।
सरल वाक्य : बिजली न होने के कारण अंधेरा था।
(ख) संयुक्त वाक्य : मोहन धनी है परंतु कंजूस है।
सरल वाक्य : धनी होने पर भी मोहन कंजूस है।

Scanned with CamScanner

वाक्य-भेद (रचना के अनुसार)

4) संयुक्त वाक्यों का मिश्र वाक्यों में रचनांतरण

(क) संयुक्त वाक्य : नेहा शोर मचा रही थी इसलिए डाँट पड़ी।
मिश्र वाक्य : नेहा को डाँट पड़ी क्योंकि वह शोर मचा रही थी।
(ख) संयुक्त वाक्य : सुरेश को रुपए मिले और उसने लौटा दिए
मिश्र वाक्य : सुरेश को ज्योंही रुपए मिले उसने लौटा दिए।

5) मिश्र वाक्यों का सरल वाक्यों में रचनांतरण

(क) मिश्र वाक्य : जिनके पास टिकट नहीं है, वे बस से उतर जाएँ।
सरल वाक्य : बिना टिकट वाले बस से उतर जाएँ।
(ख) मिश्र वाक्य : नानी जी कहती हैं कि मैं अध्यापिका बनूँ।
सरल वाक्य : नानी जी मुझे अध्यापिका बनने के लिए कहती हैं।

6) मिश्र वाक्यों का संयुक्त वाक्यों में रचनांतरण

(क) मिश्र वाक्य : यदि घूमने चलना है तो तैयार हो जाओ।
संयुक्त वाक्य : घूमने चलना है इसलिए तैयार हो जाओ।
(ख) मिश्र वाक्य : जैसे ही वर्षा हुई वैसे ही पक्षी चहचहाने लगे।
संयुक्त वाक्य : वर्षा हुई और पक्षी चहचहाने लगे।

***

गृह-कार्य

(क) निम्न वाक्यों का निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिए –

(i) ज्योंहि किसी ने घंटी बजाई, चोर भाग गया। (सरल वाक्य में)
उत्तर- किसी के घंटी बजाते ही चोर भाग गया।

(ii) आकाश में बादल छा गए और शीतल पवन बहने लगी।
(मिश्र वाक्य में)

(iii) जैसे ही वह स्टेशन पहुँचा, ट्रेन चल पड़ी। (संयुक्त वाक्य में)

(iv) सुबह हुई और पक्षी चहचहाने लगे। (सरल वाक्य में)

(v) नौकरानी बाज़ार गई थी इसलिए चोरी हो गई।
(संयुक्त वाक्य में)

(vi) जैसे ही चोर भागा, लोगों ने उसे पकड़ लिया।
(संयुक्त वाक्य में)

Scanned with CamScanner

कक्षा - दसवीं हिंदी 'अ' व्यावहारिक व्याकरण

वाक्य-भेद (रचना के अनुसार)

(ख) आश्रित उपवाक्यों को छाँटकर लिखिए और उनके भेदों के नाम भी बताइए :-

जब वह यहाँ आया, मैं सो रहा था।

उत्तर - भेद - क्रिया विशेषण उपवाक्य
जब वह यहाँ आया - आश्रित उपवाक्य ।

(1) वह आदमी जो कल यहाँ आया, मेरा मित्र था।
(2) मैंने एक व्यक्ति देखा जो बहुत लंबा था।
(3) जब भी मैं वहाँ गया, उसने मेरा सत्कार किया।
(4) उसने कहा कि मैं कल आगरा जाऊँगा।
(5) मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं इंजीनियर बनूँ।
(6) माँ की इच्छा थी कि उनका नरेंद्र वकील बने।
(7) जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहाँ-वहाँ अग्नि है।

— * * * —

Scanned with CamScanner